कथक नृत्य का स्वसाहित्य

रक्षा सिंह
शोधार्थी,
डिपार्टमेंट आफ परफॉर्मिंग आर्टस्
स्वामी विवेकानंद सुभारती यूनिवर्सिटी

साहित्य कथक नृत्य का एक अभिन्न अंग है इसमें कोई भाक नहीं है औरजहॉ कथा है वहॉसाहित्य है ।जैसा हम जानते हैं कि कथक नृत्य का सूत्र वाक्य है ''कथा कहे सो कत्थक कहावे'' ।इससे यह तो स्पश्ट है ही कि कथावाचन करने वाले एक विशेश समुदाय को कत्थक कहा जाता था। दूसरे भाब्दों में कहें तो, कथक नृत्य को प्रस्तुत करने वाले कत्थक जाति के लोग कथावाचन परंपरा से जुड़े थेऔर इस परंपरा में कथावाचक मन्दिरों तथा तीर्थ स्थानों में पौराणिक कथाओं के कुछ अंशअथवा रामायण व महाभारत की चौपाइयों को नाच–गाकर भक्त –दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया करते थे । कथक में शुरूआत से ही नृत्त पक्ष से नृत्य पक्ष का आधिक्य होता रहा है। अर्थात् साहित्य पक्ष ज्यादा और नृत्त पक्ष बहुत कम होता था। कथक की भ्ाुरुआत जरूर कथावाचन से हुई परन्तु बदलते कालखण्ड में इसकी भाक्ल काफी बदली। मुगलकाल में कलाकारों को भक्तिभाव से युक्त नृत्य भौली को छोड़ श्रृंगार प्रधान नृत्य को स्वीकारना पड़ा। अध्यात्म की जगह रस–विलास ने ले लिया क्योंकि ये कलाकार राजा–नवाबों के रुचिनुसार नृत्य करने को बाधित थे।

यहां मैं ये कहना चाहती हूं कि ये सच है कि इस कथक नृत्य में अध्यात्म की जगह श्रृंगारिता और मनोरंजन ने लिया था परंतु मुगलकाल में कुछ ऐसे भी तत्वों को इस नृत्य में भ्ाामिल किया गया जो आज के कथक नृत्य के वस्तुक्रम को और ज्यादा स ाक्त बनाता हैया कहें कि पूर्ण करता है। जैसे आमद, फरमाइ ाी, विभिन्न प्रकार के पद–संचालन, भ्रमरी में तेजी, अभिनय में सुक्ष्मता, अदायगी, अंदाज, एवं नई–नई रचनाओं का सृजन। इन सभी सृजनात्मक रचनाओं के जुड़ने से आज का कथक नृत्य और ज्यादा समृद्ध व कलात्मक प्रतीत होता है। हम ये कह सकते है कि कथक का चहुंमुखी विकास हुआ। जब से यह प्रस्फुटित हुआ, या यूं कहें इसके रूप पर निखार आया साथ ही साथ इसके स्वरूप काविस्तार भी हुआ और लय–ताल के साथ एक वि ोश सामंजस्य बना, तब से लेकर आजतक इसकी जो रुपरेखा हमें दिखाई देती है वह अपने आप में सम्पूर्ण है अथवा अपनी अभिव्यक्ति किसी भी माध्यम से करने में पूर्णतः सक्षम है ।मुगलकाल में कथक नृत्य में भजन, ध्रुवपद के साथ –साथ गीत, गजल, ठुमरी, दादरा, तराना आदि साहित्यिक रचनाओं के प्रयोग भी होने लगे जिससे कथक नृत्य का अभिनय पक्ष और ज्यादा समृद्ध व विस्तृत हो गया। महफिल में नृत्य प्रद ान से बैठकी भाव (बैठकर भाव–बताना) की विधा भी प्रारम्भ हुई ।साथ ही कथक के नृत्त पक्ष में भी वि ोश रूप से बदलाव देखने को मिले । जिस नृत्य को मंदिरों में ध्रुवपद–धमार, भजन, अश्टपदी के साथ प्रस्तुत किया जाता था और इसकी संगति के लिए पखावज जैसे गंभीर साज का प्रयोग होता था वहीं अब ठुमरी, गज़ल, नज़्म जैसी श्रृंगारिक रचनाओं को प्रस्तुत किया जाने लगा और इसके संगत के लिए तबले जैसे चंचल साज को भी जोड़ा गया। ये राजा–महाराजा अपने मनोरंजन के लिए तबला वादक और पखावज वादक के बीच लड़त–भिड़त भी करवाते थे। ऐसी प्रतिस्प्रधा ये नर्तकों के साथ भी करते थे। नर्तक अपने पैरों का काम ज्यादा करने लगे क्योंकि ये चमत्कारिक प्रतीत होता था। तबले– पखावज के बोलों कानिकास नर्तक अपने पैरों द्वारा करते थे जो धुंधरु की ध्वनि के साथ मिलकर और ज्यादा आकर्शक व प्रभाव ाली बन जाते थे। इस प्रकार कलाकारों की यह आर्कशक स्पर्धा और ज्यादा रोचक व मनोरंजक होने लगीं, जिसके परिणाम स्वरुप इस नृत्य का नृत्तांग एक अलग रुप में विकसित और पल्लवित हुआ। तेजी और चमक के कारण ही इस नृत्य भौली को एक पहचान भी मिली। अन्य नृत्य भौलियों से पृथक कथक नृत्य का विभिन्न दि ााओं में विकास हुआ।

कथक नृत्य और साहित्य के अंतर्संबंध के विशय में तो मैं पहले ही र्चचा कर चुकी हूॅ। कथक के नृत्य एवं नृत्त दोनों पक्ष में साहित्य का प्रयोग अलग –अलग ठंग से किया जाता है स्तुति, वन्दना, भजन, पद, ठुमरी, गज़ल, दादरा, गतनिकास, गतभाव, कवित्त, गीत–सरगम, तराना, होरी, ध्रुपद–धमार, अश्टपदी, चतुरंग आदि गेय रचनाऐं नृत्य पक्ष में प्रस्तुत किए जाते हैं जो कथक नृत्य का साहित्यिक पक्ष है। इसके अलावा कथक के नृत्त पक्ष को देखें तो इसमें ठाठ, आमद, उठान, परण–आमद, सलामी ,नटवरी का तोड़ा, तोड़े– टुकड़े, परण, प्रमिलु, कवित्त ,तिहाई, लड़ी, चलन, बोलबॉट, लयबॉट के अलावा, फरमाईशी, कमाली जैसी वि ोश रचनायें मुख्य रूप से प्रस्तुत किये जाते हैं जो कथक नृत्य का स्वसाहित्य कहलाता है। कथक नृत्य के प्रारम्भ में किये जाने वाले स्तुति–वन्दना के साथ नृत्य, तबला, पखावाज आदि के बोलो का भी समावेभा कई बार देखने को मिलता है, जिन बोलों पर भावाभिनय किया जाता है। चूंकि इन रचनाओं को कथक नृत्य के लिए विभोश रूप से बनाया जाता है इसलिए इन्हें भी कथक का स्वसाहित्य कहा जाता है। जैसे जयपुर घराने की एक बहुत लोकप्रिय गणे ा परणजिसे विलंबित लय में प्रस्तुत किया जाता है ।

उदाहरण :–

गं गं गणपति गजमुख मंगल गिटगिड़ गिटगिड़ गिटगिड़ थुंन थुंन ,तत् तत् थेई –

जय जग वन्दन वक्र तुण्ड दानी दाता ,विघन हरण भुभ करन धागेन धागे

धुमकिट धुमकिट ,थुड़ंग थुड़ंग दधिगन थेई ,थुड़ंग थुड़ंग दधिगन थेई ,थुड़ंग थुड़ंग दधिगन थेई

उसी प्रकार द्रुत लय में प्रस्तुत किया जाने वाला कवित्त जिसमें साहित्यिक बोलों के साथ नृत्य व तबले के बोलों का भी समावे ा होता है । यह भी कथक का स्वसाहित्य ही है ।

उदाहरण :—

यमुना के तट पर नाचत कन्हैया

ता ता थेईया, बाजत पायल छुम छन नन नन नन

ता थेईता आ थेईता, ता थेईता आ थेईता, ता थेईता आ थेईताथेई

नृत्त पक्ष में प्रस्तुत किए जाने वाले प्रिमलू भी ऐसी ही एक प्रकार की रचना है जिसे वि ोश रूप से कथक नृत्य के लिए ही बनाई गई है ।इसके अंतर्गत साहित्य के साथ प्रकृति ,तबला, पखावज आदि के बोलों का भी मिश्रण होता है ।

उदाहरण :—

तत् तत् ता दृग झनझन झिझिकिट थो थुड़ग तक थुंतक तिगधा दिगदिग थेई ।

उपरोक्त सभी उदाहरणों से यह तो स्पश्ट है कि अभिनय पक्ष के साथ—साथ कथक नृत्य का तकनीकि पक्ष भी साहित्य से अछूता नहीं रहा है कथक नृत्य की अपनी एक अलग भाशा है, स्वसाहित्य है जो कलाकार के मनोभावों को व्यक्त करने की क्षमता रखती है ।

कथक के वस्तुक्रम में तोड़ा, परण, प्रमिलू, आदि नृत्य के बोलों को आंगिक अभिनय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, वैसे तो ये बोल अपने आप में अर्थहीन होते हैं लेकिनकथक नृत्य के विभिन्न निरर्थक बोलों पर कई कलाकार अपनी कल्पना भाक्ति द्वारा भिन्न—भिन्न भावों को भी दर्भाते हैं जिसके अंतर्गत कलाकार किसी भी पात्र जैसे कृश्ण, राधा, भिव, पार्वती नायक —नायिका आदि के भाव या प्रकृति के दृभयों जैसे नदी, झरना ,वन—उपवन आदि को भी प्रस्तुत करतें हैं। जिससे वह निरर्थक बोल व रचनाऐं भी सार्थक हो जाती हैं । कलाकार की कल्पनाशक्ति एवं क्षमता के द्वारा रचित कुछ विशेश रचनाएं भावाभिव्यक्ति में पूर्ण रूप से सहायक होती है। उदाहरण के लिए रायगढ़ के दरबार में इस तरह की कई रचनाएँ रची गईं जिसमें तबले—परवाजन के बोलों के साथ पक्षियों की ध्वनि, मेधध्वनि, बिजली की ध्वनि से समानता रखने वाले बोलों को भी सम्मलित किया गया। जैसे कड़क—बिजली, दल—बादल परण, गज—बिलास, किलकिला, अमृतध्वनि मीण—परण इत्यादि ।इस प्रकार की वि ोश रचनाऐं किसी अन्य नृत्य भौली में देखने को नहीं मिलते हैं, अतः यह भी कथक का स्वसाहित्य ही है ।

उदाहरण :—

<u>दल बादल परण</u>

नगन धेत—तधे तड़न्न धा धा,
किड़ धेत् धेत् धेत् धड़न्न धिट धिट
धगन कत् धगन कत्
तिट तिट धिट धिट ए तड़न्न तकिट तक दिगगिन्नाड़ धित तगन्न धा
ताधा किटतक घेतिटतगन तागे तिट गदिगन तान धा
ताधा किटतक घेतिट तगन तागे तिट गदिगन तान धा
ताधा किटतक घेतिट तगन तागे तिट गदिगन तान धा

कथक नृत्य के द्रुतलय में प्रस्तुत किये जाने वाले गत— निकास और गत—भाव के अंतर्गत निरर्थक भाब्दों या बोलों द्वारा विभिन्न प्रकार के कथानकों, पात्रों व दृभयों को दर्शाया जाता है। जैसे गत—निकास में , बांसुरी, घुंघट, पनिहारी की गत आदि और गत—भाव के अंतर्गत माखन— चोरी, कालिया दमन, द्रौपदि चीर—हरण आदि । कुछ रचनाएं तो ऐसी होती हैं जिनमें साहित्यिक बोलो का सीधा प्रयोग किया जाता है। जैसे प्रमिलू में तबला— पखावज के बोल, पभ्रु—पक्षी की बोलियां, प्राकृतिक बोलों आदि का समावेभा होता हैं। इसके अलावा गणेभा—परण, भिव—परण, विश्णु परण आदि में कवित्त और पखावज के बोलों या नृत्य के बोलों का मिश्रण होता है। इस प्रकार की रचनाएं भी कथक नृत्य की विभोश रचनाओं की श्रेणी में आते हैं। जिन्हें कथक का स्वसाहित्य कहा जाता है। इसके अलावा पखावज के बोलों पर आधारित कुछ परणों की रचना सिर्फ कथक नृत्य के लिए ही की गई हैं, इन्हें पखावज की एकल प्रस्तुति में प्रयोग नहीं किया जाता है। जैसे :—

1.धातक थुंगा........,
2.किटतक थुंथुं....... ,
3.तत् तत् ता द्रग ....
4.ताव थुंगा तकिट थुंगा,
5.धाधाधा धीधीधी नननन आदि

यह सब भी कथक नृत्य का स्वसाहित्य ही है। इनके अलावा नृत्य के बोलों द्वारा रचित रचनाऐं जिनमें केवल इन्ही बोलों का प्रयोग किया जाता है , भी कथक के स्वसाहित्य ही हैं। जैसे :—

1.आमद के बोल :— ता थेई तते् , आ थेई तते्.........

2.उठान के बोल :—दिगदिग थेई तथेई तथेई— दिगदिग थेई तथेई तथेई......

इस प्रकार हम देखते हैं कि कथक का स्वसाहित्य भी अपने आप में कितना सभाक्त और विस्तृत है ।अगर नृत्य हमारा माध्यम है तो इसी के भाशा का प्रयोग हमें सबसे ज्यादा करनी चाहिए।

लेखिका-रक्षा सिंह

शोधार्थी , डिपार्टमेंट आफ परफॉर्मिंग आर्टस् स्वामी विवेकानंद सुभारती यूनिवर्सिटी